संस्कृत-साहित्य
की
आधुनिक प्रवृत्तियाँ

सम्पादक : प्रो. कुसुम भूरिया दत्ता

Scanned with CamScanner

१०. आधुनिक काव्य की अभिनव प्रवृत्तिः संस्कृत गज़ल ८०
सन्दर्भ 'हविर्धानी'—*डॉ० सुमनलता श्रीवास्तव*

११. आधुनिक संस्कृत आलोचना की नवीन प्रवृत्ति ९२
(प्रतीक, बिम्ब व मिथक के विशेष सन्दर्भ में)
—*डॉ० कौशल तिवारी*

१२. प्रमुख आधुनिक संस्कृत महाकाव्य : दशा एवं दिशा ९९
—*डॉ० सञ्जय कुमार*

१३. आधुनिक संस्कृत कथाओं में स्त्री चिन्तन के विविध रूप. ११२
—*डॉ० डॉली जैन*

१४. स्वातंत्र्योत्तर संस्कृत गीतिकाव्यों का वैशिष्ट्य (म० प्र० के सन्दर्भ में) ११८
—*डॉ० लाखन सिंह शाक्य*

१५. सर्वविधसाहित्यसर्जकाधिराजोऽभिराजः १२८
—*प्रो० रहसविहारी द्विवेदी*

१६. "ज्ञान" कवि की प्रौढि "योषासप्ततिका"(मातृत्व विवक्षा) १३१
—*प्रो० कुसुम भूरिया*

१७. अलिविलासिसंलाप - महाकाव्य रचना का अभिनव मानदण्ड १३६
—*डॉ० रमाकान्त पाण्डेय*

१८. 'कालोऽस्मि' : आधुनिक काव्य की अभिनव प्रवृत्ति १४८
—*डॉ० इला घोष*

१९. आधुनिक संस्कृत-काव्य की लालित्यमय प्रवृत्ति–'लोकगीत' १५४
—*डॉ० पुष्पा झा*

२०. विक्रमचरिते राधावल्लभप्रदर्शितायाः साहित्यिकप्रवृत्तेश्चर्चा १६७
—*डॉ० भागीरथिनन्दः*

२१. 'व्रणो रूढग्रन्थि' : में प्रतीक और बिम्बविधान १७१
—*डॉ० मञ्जुलता शर्मा*

२२. "जागरणम्" गीतिकाव्य में आधुनिक प्रवृत्तियाँ १८२
—*डॉ० कृष्णा जैन*

Scanned with CamScanner

१२

प्रमुख आधुनिक संस्कृत महाकाव्य : दशा एवं दिशा

डॉ० सञ्जय कुमार

विश्व की सभी भाषाओं में संस्कृत प्राचीन एंव श्रेष्ठ भाषा है। इसमें भारतीय लोक-परम्परा ज्ञान, दर्शन एवं साहित्य के विविध आयाम विद्यमान हैं। शताब्दियों से विद्वान् मनीषीगढ़ संस्कृत भाषा की समृद्धि में संलग्न होकर इसे विश्वस्तर पर प्रमाणिक रूप से प्रकाशित करते रहे हैं तथा आज भी अपने अथक प्रयास से निरन्तर इसकी विविधता को अक्षुण रखे हुए हैं। इनके अथक परिश्रम का परिणाम यह हुआ कि काव्य, महाकाव्य, कथा, नाटक के साथ-साथ नवगीत, गजल, एकांकी, लहरी, उपन्यास, दैनन्दिनी और उपाख्यान जैसी नवीन साहित्यिक विधाओं का जन्म हुआ। इस प्रकार संस्कृत अपनी प्राचीनता से अर्वाचीनता की ओर गमन करती हुई अन्य भाषाओं के साहित्यों में अपना सर्वोच्च स्थान रखती है।

साहित्य समाज का दर्पण होता है। जैसा समाज होता है वैसा ही कवि मनीषी भी साहित्य की सृष्टि करता है। इसीलिये कहा जाता है कि जो लोक में होता है वही शास्त्र बनता है। व्याकरण के नियम भी लोक-व्यवहार पर ही अश्रित है। भले हम कवि प्रजापति की बात करते हैं कि वह अपनी इच्छानुसार जैसा भी काव्य-संसार रचना चाहे रच सकता है, लेकिन उसकी रचना में लोक का बीज ही प्रस्फुटित हुआ रहता है। जो अपनी शब्द ज्योति से लोकत्रय को प्रकाशित करता है। काव्य की महनीयता को स्वीकार करते हुए आचार्य दण्डी काव्यादर्श में लिखते हैं-

आदिराज यशोविम्बमादर्शं प्राप्य वाङ्मयम्।
तेषामसन्निधानेऽपि न स्वयं पश्य नश्येति।।[1]

Scanned with CamScanner